स्वतन्त्र न्यायपालिका

नेपालमे सहभागितामूलक संविधान निर्माण पुस्तिका श्रृंखला
संख्या - ८

CCD
Centre for Constitutional Dialogue
संवैधानिक संवाद केन्द्र

मैथिली

नेपालमा सहभागितामूलक संविधान निर्माण परियोजना- युएनडीपी

प्रकाशक

संवैधानिक संवाद केन्द्र

प्रथम संस्करण: २०६५ साल

प्रतिलिपि अधिकार © संवैधानिक संवाद केन्द्रमे सर्वाधिकार सुरक्षित अछि । सामग्रीक स्रोतक रुपमे संवैधानिक संवाद केन्द्रक नामे साभार व्यक्त क' गैरव्यावसायिक प्रयोजनक लेल ई पुस्तकक अंशसभ पुनःप्रकाशन आ/अनुवाद कएल जा सकैत अछि। पुनःप्रकाशन आ/अनुवादक एकप्रति संवैधानिक संवाद केन्द्रकेँ उपलव्ध कराओल जाएत ।

साजसज्जा आ मुद्रण

प्रिन्ट प्वाइन्ट पव्लिसिङ्ग, त्रिपुरेश्वर, काठमाण्डू ।

विशेष जानकारी अथवा ई पुस्तकक प्राप्तिक लेल निम्नलिखित स्थानपर सम्पर्क राखब :

संवैधानिक संवाद केन्द्र

तेसर आ चारिन तल्ला, अल्फा बेटा कम्प्लेक्स, बुद्धनगर, काठमाण्डू

टेलिफोन नं.: ९७७-१-४७८५४६६/४७८५४८६/४७८५९९८

ई –मेल: info@ccd.org.np

वेब साइट: www.ccd.org.np

स्वतन्त्र न्यायपालिका

पुस्तिका शृंखला ८

स्वतन्त्र न्यायपालिका १
स्वतन्त्र न्यायपालिका कि अछि ? २
संविधानमे स्वतन्त्र न्यायपालिकाक स्थापना कोना होइत अछि ? २
स्वतन्त्र न्यायपालिकाक स्वरूप कोना तैयार होइत अछि ? ३
न्यायपालिकाक शक्ति अथवा अधिकारसभ कि कि अछि ? ४
न्यायपालिकाक वित्तीय स्वतन्त्रताके कोना सुनिश्चित कएल जाइत अछि ? ४
न्यायपरिषद कि अछि ? ५
स्वतन्त्र न्यायपालिकाक सम्बन्धमे संविधानसभाद्वारा विचार-विमर्श होब'बला विषयसभ कि-कि अछि ? ६
नेपालक न्यायिक इतिहास कि अछि ? ६
संविधानसभामे विचार-विमर्श होब'बला बिषयसभ ७

स्वतन्त्र न्यायपालिका

कोनो लोकतान्त्रिक समाजमे स्वतन्त्र न्यायपालिका महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करैत अछि।

» न्यायपालिका संविधानक अभिभावक अछि।

» ई नागरिकक कानुनमोताबिकक हकक रक्षक अछि।

» जँ सरकार कहिओ बिनाअधिकार कोनो काज केलक त' तकरासम्बन्धमे न्यायपालिका निर्णय करैत अछि आ गैरकानुनी काजकेँ रोकबालेल आदेश द' सकैत अछि।

» ई जँ सरकार अपन कर्तव्यपालन करबामे असफल भेल त' ताहि सम्बन्धमे निर्णय करैत अछि आ कर्तव्यपालनक लेल सरकारकेँ आदेश द' सकैत अछि।

» न्यायपालिका सरकारक निकायसभक बीच उत्पन्न विवादक सम्बन्धमे निर्णय दैत अछि। न्यायपालिका नागरिकबीचक विवादपर निष्पक्ष रूपसँ निर्णय दैत अछि तथा कानुनी अधिकारक कार्यान्वयन करबैत अछि।

सामान्यतः कोनो संविधानमे स्वतन्त्र न्यापालिकाक प्रमुख तत्वसभक उल्लेख कएलगेल रहैत अछि। संविधान न्यायिक शक्ति, कार्य, संरचना, क्षेत्राधिकार आ न्यायाधीशसभक नियुक्ति तथा पदमुक्तिक प्रक्रियासभकेँ स्थापित करैत अछि। किछु तत्वसभ संविधानक घोषणाक बाद कानुनअनुसार निश्चित होबाक हिसाबसँ व्यवस्था कएलगेल रहैत अछि। लोकतन्त्रमे प्रमुख रूपसँ चारि प्रकारक मूल्यसभसँ न्यायपालिकाकेँ मार्ग निर्देशित होबाक चाही आ प्रत्येक मूल्य न्यायाधीशसभ तथा समग्र न्यायपालिकाक सन्दर्भमे लागू होइत अछि।

लोकतन्त्रमे न्यायपालिका		
मार्गनिर्देशक मूल्यसभ	**न्यायाधीशक लेल**	**समग्र न्यायपालिकाक लेल**
स्वतन्त्रता	कोनो न्यायाधीश मुद्दाक निर्णय कोनो पक्षकेँ प्राथमिकता नहि द' तथा बिना कोनो प्रकारक डरत्रास कानुन मोताबिक मात्र करबाक चाही ई निर्णयकारी स्वतन्त्रता अछि।	नियुक्ति, पदोन्नति, स्थानान्तरण, अनुशासन तथा बजेटसम्बन्धी बातक अतिरिक्त न्यायपालिकाक कार्यक्षमतामे प्रभाव उत्पन्न कर'बला कोनो प्रकारक विषयमे सरकारद्वारा होब'बला अनुपयुक्त प्रभावसभसँ न्यायपालिकाकेँ संरक्षित होबाक चाही।
जबाबदेहिता	कोनो न्यायाधीश ओकरा अपनाद्वारा कएलगेल निर्णयक सम्बन्धमे खुला अदालतमे अपन प्रस्तुतिक माध्यमसँ तथा अपनाद्वारा भेल गैरकानुनी काजक लेल अनुशासनसम्बन्धी प्रक्रियाद्वारा जवाबदेह होइत अछि।	उपरोक्त पक्षसभमे न्यायपालिकाक उपर प्रभाव देखौलाक स्थितिमे न्यायपालिकाकेँ पूर्ण पारदर्शी निर्णयक माध्यमसँ जबाबदेह होबाक चाही। आ, सार्वजनिक कोषक उपभोगक सम्बन्धमे एकरा विधायिकाक लेल जवाबदेह होबाक चाही।

मार्गनिर्देशक मूल्यसभ	न्यायाधीशक लेल	समग्र न्यायपालिकाक लेल
प्रभावकारिता	न्यायाधीशद्वारा भेल निर्णय तथा अदालतक व्यवस्थापन व्यावशायिक सक्षमता उँच मापदण्डक होबाक चाही ।	न्यायाधीशसभक प्रभावकारितासम्बन्धी पक्षसभ सरकारद्वारा नहि, अपितु न्यायाधीशसभकेँ स्वयं सम्बोधन करबाक चाही जाहिसँ सक्षम न्यायाधीशसभक मात्र पदोन्नतिक लेल बिचार कएल जा सकए ।

नेपालक न्यायपालिकाक स्थापनाक लेल संविधानसभाकेँ बिभिन्न पक्षसभपर ध्यान देब' पड़त ।

१. स्वतन्त्र न्यायपालिका कि अछि ?
२. संविधानमे स्वतन्त्र न्यायपालिकाक स्थापना कोना होइत अछि ?
३. स्वतन्त्र न्यायपालिकाक स्वरूप कोना तैयार होइत अछि ?
४. स्वतन्त्र न्यायपालिकाक अधिकारसभ कि-कि अछि ?
५. न्यायपालिकाक आर्थिक (वित्तीय) स्वतन्त्रताकेँ कोना सुनिश्चित कएल जाइत अछि ?
६. न्यायपरिषद कि अछि ?
७. स्वतन्त्र न्यायपालिकाक सम्बन्धमे संविधानसभाद्वारा विचारविमर्श होब'बला बिषयसभ कि-कि अछि ?
८. नेपालक न्यायिक इतिहास केहन अछि ?

१. स्वतन्त्र न्यायपालिका कि अछि ?

स्वतन्त्र न्यायपालिका अपन निर्णय करबामे सक्षम होइत अछि। ई राजनीतिक दल, सरकारी निकाय आ अन्य व्यक्तिसभक अतिरिक्त बाह्य प्रभावसँ मुक्त एक स्वतन्त्र संस्थाक रूपमे संचालित रहैत अछि।

स्वतन्त्र न्यायपालिका सरकारक एक गोट विभाग सेहो अछि जे अन्य विभाग-कार्यकारी आ विधायिकासँ स्वतन्त्र भ' संचालित रहैत अछि । एहन स्वतन्त्रता ई तीन गोट शाखासभक बीच प्रभावकारी शक्ति सन्तुलनकेँ प्रवर्द्धन करैत अछि । संविधान प्रत्येक शाखाक भूमिका आ जिम्मेबारीक स्पष्ट व्यवस्था क' स्वतन्त्रताकेँ सुनिश्चित करबालेल ई सहयोग पहुँचबैत अछि।

निष्पक्ष न्यायप्रणालीक स्थापनासँ न्यायपालिकाउपर राजनीतिक प्रभाव न्यून करबाक सरकारक अभिप्रायकेँ नागरिकसमक्ष देखबैत अछि। कोनो राजनीतिक दल अथवा विचारधाराक लेल जबाबदेह होबाक बदला न्यायपालिका संविधान आ कानुनद्वारा जनताक लेल जवाबदेह होइत अछि।

२. संविधानमे स्वतन्त्र न्यायपालिकाक स्थापना कोना होइत अछि ?

न्यायपालिका, संविधान तथा कानुनक अन्तिम व्याख्याता अछि। सब सरकारी निकायसभकेँ न्यायपालिकाक निर्णय मान' पड़ैत छैक। ई निर्णय तथा व्याख्यासभ भविष्यक लेल नजीर आ उदाहरण बनैत अछि।

संविधानकेँ संस्थागत तथा निर्णयकारी स्वतन्त्रता भेल न्यायपालिकाक निर्माण करबाक चाही । संस्थागत स्वतन्त्रता न्यायपालिकाकेँ अन्य क्षेत्रक प्रभावसँ मुक्त भ’अपन प्रशासन संचालन करबाक लेल सक्षम बनबैत अछि । उदाहरणक लेल, संस्थागत रूपसँ स्वतन्त्र न्यायपालिका न्यायाधीशसभक नियुक्ति तथा अनुशासन, न्याय सेवाक पारिश्रमिक तथा बजेट आ न्यायाधीशसभक कार्यसम्पादनक समीक्षा तटस्थ भ’क’ करैत अछि । न्यायपरिषद न्यायाधीशसभकेँ आवश्यक अधिकार प्रदान क’ उपरोक्त काज क’ सकैत अछि । संस्थागत स्वतन्त्रता निर्णयकारी स्वतन्त्रताकेँ आगाँ बढ़बैत अछि । निर्णयकारी स्वतन्त्रता कहलासँ न्यायपालिका बाह्य क्षेत्रक दबाब आ प्रभावसँ मुक्त रहि संविधान आ देशक प्रचलित कानुनमे मात्र आधारित रहि अपन निर्णय करैत अछि, से बातक बोध होइत अछि ।

संविधानकेँ अन्य सरकारी निकायसभक संग न्यायपालिकाक सम्बन्धकेँ सेहो परिभाषित करबाक चाही आ सरकारक अन्य निकायसभद्वारा एकर (न्यायपालिकाक) अधिकारकेँ अनुचित रूपसँ प्रभावित नहि कएल जेबाक चाही से बात स्पष्ट होबाक चाही । एहन संस्थागत स्वतन्त्रता प्राप्त करेबामे न्यायपरिषद (कृपया नं. ६ देखब) सहयोग क’ सकैत अछि ।

३. स्वतन्त्र न्यायपालिकाक स्वरूप कोना तैयार होइत अछि ?

स्वतन्त्र न्यायपालिकाक विकाससम्बन्धी नागरिकक आवश्यकताकेँ ध्यान दैत, नागरिक सरोकारसभकेँ सर्वोच्च बुझि ताहि रूपसँ सम्बेधन करबालेल न्यायपालिकाक विकासक लेल राज्यसभ सक्षम अछि । संविधान प्रायः न्यायपालिकाक संरचनाक स्थापना नागरिकसभक अधिकारक सर्वोत्कृष्ट रूपसँ संरक्षणक हिसाबसँ केने रहैत अछि । संविधानअन्तर्गत अदालती प्रणालीक संरचनाक खाका तैयार क’ राज्य न्यायिक स्वतन्त्रताकेँ सुदृढ़ बनेबामे सहयोग करैत अछि । संविधान स्वप्रशासनक महत्त्वपूर्ण तत्वसभ भेल न्यायपालिकाक सिर्जना क’ सकैत अछि ।

संघीय संविधान विभिन्न तहक अदालतक स्थापना क’ सकैत अछि अथवा निचुका अदालतसभक स्थापना करबाक काज विधायिका पाछा करत ताहि प्रकारसँ व्यवस्था क’ सामान्यतः सर्वोच्च अदालतक मात्र स्थापना क’ सकैत अछि । उदाहरणक लेल दक्षिण अफ्रिकाक संविधान बहुतरास संख्यामे अदालतसभक सूची बनौने छल आ स्लोभेनियाक संविधान सर्वोच्च अदालतक मात्र स्थापना क’ बाँकी अन्य अदालतसभक स्थापना पाछा कानुनद्वारा हेबाक व्यवस्था कएने छल । संसदकेँ आवश्यकतानुसार निचुका अदालतक सिर्जना करबालेल प्रदान कएलगेल अधिकारक व्यवस्था जनसाधारणकेँ यथासम्भव न्यायमे उत्कृष्ट पहुँचक लेल परिवर्तित अवस्थाकेँ ग्रहण करबामे लचकता प्रदान करैत अछि ।

संविधान सामान्यतः संवैधानिक अदालत अथवा सर्वोच्च अदालत अथवा दुनूक स्थापना करैत अछि । संवैधानिक अदालत स्वाभाविक रूपसँ संवैधानिक विषयवस्तुसभक क्षेत्राधिकार समेटने रहैत अछि । संवैधानिक व्याख्याकेँ एकेटा अदालतमे मात्र केन्द्रीकृत केलापर संविधानक स्थिर अथवा अटल व्याख्या कायम होइत अछि । अन्य मुद्दासभमे सर्वोच्च अदालत आ निचुका अदालतसभक क्षेत्राधिकार रहैत अछि । संवैधानिक अदालत नहि रहल देशसभमे संवैधानिक विषयवस्तुसभक संग सब मुद्दासभमे सर्वोच्च अदालत आ निचुका अदालतसभक क्षेत्राधिकार कायम रहैत अछि ।

संविधान उपरूकां अदालतक अतिरिक्त अन्य अदालतसभक सेहो व्यवस्था क' सकैत अछि । संविधान ओहन अदालतसभ जेना प्रशासकीय अदालत, न्यायाधीकरण आ फौजदारी अदालत इत्यादिक स्थापना करबालेल आवश्यकताअनुसार विधायिकाकेँ अधिकार प्रदान क' सकैत अछि । नागरिकक समस्यासभक सम्बोधन करबाक क्षमताक संग स्थापित अदालतसभक बढ़ैत संख्या नागरिककेँ न्यायपर व्यापक रूपसँ पहुँच देखबैत अछि। राज्य द्वन्द्वोत्तरक संक्रमणमे रहल समयमे न्यायमे बढ़ैत तथा सुदृढ पहुँच सम्पूर्ण देशक एकताकेँ सुदृढ बनेबामे योगदान पहुँचबैत अछि आ राज्यकेँ स्थिर बनेबामे सेहो सहयोग पहुँचबैत अछि ।

संविधान न्यायप्रणाली एकात्मक अथवा द्वैध (दू प्रकारक) अदालती प्रणालीमेसँ कोन प्रकारक हएत ताहि विषयमे सेहो उल्लेख केने रहैत अछि। एकात्मक प्रणालीमे एक प्रकारक अदालती व्यवस्था होइत अछि आ ई सभ मुद्दाक फैसला (निर्णय) करैत अछि । ई प्रणाली कम खर्चिला आ आसानीसँ व्यवस्थित होब'बला होइत अछि । मुदा, एहिमे संघीय अथवा प्रान्तीय मुद्दासभक सम्बोधन करबामे कठिनाई होइत अछि । द्वैध प्रणाली प्रायः संघीय व्यवस्थामे प्रयोगमे लाओल जाइत अछि किएक त' ई उप-राष्ट्रिय एकाइसभकेँ स्थानीय विवाद समाधान करबाक क्षमता प्रदान करैत अछि ।

४. न्यायपालिकाक शक्ति अथवा अधिकारसभ कि कि अछि ?

न्यायपालिकाक शक्ति अथवा अधिकारसभक निर्धारण करैत काल ई अधिकारसभ संस्थागत तथा निर्णयकारी स्वतन्त्रतामे कोना प्रभाव देखाओत संविधानमे ताहि बातक उल्लेख हएब महत्त्वपूर्ण होइत अछि । ई स्वतन्त्रता अदालती प्रणालीकेँ जबाबदेह, प्रभावकारी आ सक्षम बनेबालेल महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि।

संविधान प्रायः न्यायपालिकाक शक्ति अथवा अधिकारसभक खाका बनौने रहैत अछि। ई देश अन्तर्गतक न्य(ायपालिकाक मार्गनिर्देशक सिद्धान्तसभक स्थापना करबालेल सहयोग पहुँचौने रहैत अछि। संविधान स्वतन्त्र न्यायपालिकाकेँ विभिन्न विषयसभमे जिम्मेबार बनौने रहैत अछि। स्वतन्त्र न्यायपालिका प्रायः संविधानक संरक्षण करबामे जिम्मेवार होइत अछि। तहिना सन्तुलित तथा क्रियाशील कानुनी प्रणालीक प्रवर्द्धन करबामे स्वतन्त्र न्यायपालिका प्रायः जिम्मेवार रहैत अछि । महत्वपूर्ण रूपसँ, स्वतन्त्र न्यायपालिकाद्वारा जनताक अधिकार तथा आकांक्षासभक संरक्षण कएल जेबाक चाही। संविधानमे न्यायपालिकाक अधिकारक रूपरेखा प्रस्तुत भेलाक बाद, देश स्वतन्त्र न्यायपालिकाक प्रवर्द्धन तथा सरकारक लेल जनताक विश्वास निर्माण करैत जनताक आकांक्षासभकेँ न्यायपालिकाक समक्ष राखि देने रहैत अछि।

५. न्यायपालिकाक वित्तीय स्वतन्त्रताकेँ कोना सुनिश्चित कएल जाइत अछि ?

न्यायिक निर्णयसँ असन्तुष्ट भेल राजनितिज्ञसभद्वारा न्यायपालिकाक बजेट कटौती करबाक प्रयास कएल जाएब सामान्य बात अछि । स्वतन्त्र न्यायपालिकाक स्थापना करबामे वित्तीय स्वतन्त्रताक महत्त्वपूर्ण भूमिका रहैत अछि । वित्तीय स्वतन्त्रता सामान्यतः संविधानमे प्रत्याभूत कएल गेल रहैत अछि । देशक वार्षिक वजेटक निश्चित प्रतिशत न्यायपालिकाक लेल विनियोजन कएल गेल रहैत अछि। अथवा,

न्यायपालिकाक बजेटकेँ परिवर्तन अथवा परिमार्जन करबाक सरकारक क्षमताकेँ संविधान सीमित क' सकैत अछि। उदाहरणक लेल, संविधानमे न्यायपालिकाक बजेट कटौतीकेँ रोकबाक व्यवस्था कएल जा सकैत अछि।

न्यायपालिकाक बजेटक तर्जुमा (निर्धारण) अथवा समीक्षा सामान्यतया कमसँकम दू गोट सरकारी निकायसभ करैत-रहैत अछि। ई बजेट निर्माण प्रक्रियामे राजनीतिक प्रभावकेँ निरूत्साहित तथा पारदर्शिताकेँ प्रोत्साहित करबामे मद्दति करैत अछि। अन्य निकायसभक संगक सहकार्यमे बजेट निर्माण करबाक जिम्मेवारी प्रायः कार्यकारी अथवा न्यायिक निकायमे रहैत अछि। विधायिकाक जिम्मेवारी प्रायः न्यायिक बजेटक समीक्षा करबाक होइत अछि। न्यायिक स्वतन्त्रताक संरक्षण करबालेल तथा राजनीतिक प्रभावकेँ रोकबाक लेल देशक सर्वोच्च अदालतकेँ अपन बजेट निर्धारण तथा कार्यान्वयन करबालेल अधिकार प्रदान कएल गेल रहैत अछि। न्यायपरिषद (कृपया निचुकां बूंदा ६ मे देखू) केँ सेहो बजेट बनेबाक काज देल गेल रहैत छैक।

६. न्यायपरिषद कि अछि ?

संविधानमे प्रायः न्यायधीशसभक चयन कोना कएल जाइत अछि ताहि बातक उल्लेख कएल गेल रहैत अछि। न्यायाधीशसभक चयनक लेल विभिन्न विधिसभ अछि। न्यायाधीशसभक चयन राष्ट्रपति क' सकैत अछि। न्यायाधीशसभक चयन संसद सेहो क' सकैत अछि। न्यायाधीशसभ कहिओकाल जनताद्वारा निर्वाचित सेहो भ' सकैत अछि। अन्तमे, किछु देशसभमे न्यायाधीशसभक चयन न्यायपरिषदद्वारा सेहो कएल जाइत अछि।

न्यायपरिषद एकटा स्वतन्त्र संस्था अछि आ ई न्यायपालिकाकेँ स्वतन्त्रताकेँ कायम राख'मे मद्दति पहुँचबैत अछि। न्यायपरिषद न्यायपालिकासम्बन्धी नियम तथा प्रशासनकेँ व्यवस्थित करबाक काज करैत अछि। न्यायपरिषद न्यायपालिकाक संस्थागत स्वतन्त्रताक स्थापना करबाक काजमे मद्दति पहुँचबैत अछि।

न्यायाधीशसभ, कानुन व्यवसायीसँ ल'क' व्यवसायी तथा सरकारी अधिकारीसभ जकाँ विभिन्न पृष्ठभूमिक व्यक्तित्वसभक सम्मिश्रणसँ न्यायपरिषदक निर्माण होइत अछि। ई सदस्यसभ न्यायपरिषदमे निर्वाचित, कार्यपालिका अथवा व्यवस्थापिकाद्वारा नियुक्त अथवा निर्वाचित आ मनोनित सदस्यसभक सम्मिलित रुप सेहो भ' सकैत अछि। न्यायपालिकाक स्वतन्त्रताकेँ सुनिश्चित करबालेल न्यायपरिषदमे सदस्यसभक नियुक्तिक लेल न्यायधीशसभक बीच मतदान करबाक व्यवस्था कएल गेल रहैत अछि। प्रधान न्यायाधीश अथवा सर्वोच्च अदालतक अध्यक्ष न्यायपरिषदक अध्यक्षक रूपमे रहैत अछि।

न्यायपरिषदक काज, कर्तव्य आ अधिकार विशेष क' न्यायाधीशसभक चयन तथा मूल्याङ्कनक काजमे पारदर्शिताक प्रवर्द्धन करब अछि। न्यायपरिषद सामान्यतः क्षमता आ योग्यताअनुसार न्यायाधीशसभक चयन अथवा सिफारिस करैत अछि। न्यायपरिषदद्वारा होब'बला आओर काजसभमे प्रशासकीय काजसभ, न्यायपालिकाक दैनिक संचालन, सदस्यसभक आचरणक नियमन, न्यायपालिकाक बार्षिक बजेट तैयार केनाई तथा न्यायाधीश आ न्यायसेवाक कर्मचारीसभकेँ (तालिम) प्रशिक्षणक व्यवस्था केनाई इत्यादि अछि।

७. स्वतन्त्र न्यायपालिकाक सम्बन्धमे संविधानसभाद्वारा विचार-विमर्श होब'बला विषयसभ कि-कि अछि ?

स्वतन्त्र न्यायपालिकाक स्थापनाक सन्दर्भमे उपयुक्त संवैधानिक व्यवस्था करबालेल संविधानसभाकेँ विभिन्न विषयसभकेँ विशेष ध्यान देब' पड़त

» कि स्वतन्त्र न्यायपरिषद हएव आवश्यक अछि ? एकर अधिकारसभ कि कि हएत ? एकर स्वतन्त्रता कोना सुनिश्चित कएल जा सकैए ?

» न्यायपालिकामे कोन-कोन तहसभ हएत ?

» न्यायप्रणाली एकात्मक अथवा द्वैध कोन प्रकारक हेबाक चाही ?

» न्यायपालिकाक अधिकारसभ केहन-केहन होबाक चाही ?

» न्यायधीशक योग्यता केहन होबाक चाही ?

» राष्ट्रिय आ प्रान्तीय स्तरिपर न्यायधीशसभक नियुक्ति कोना होबाक चाही ?

» न्यायाधीशसभक आचरणक अनुगमन कोना करबाक चाही ?

» न्यायाधीशसभक भूमिका, जिम्मेवारी तथा पदाबधि कोन प्रकारक होबाक चाही ?

» कोनो न्यायाधीशकेँ कोना पदमुक्त कएल जा सकैत अछि ?

» अदालतमे जनताक पहुँचकेँ कोना बृद्धि कएल जा सकैत अछि ?

» अदालतमे जनताक पहुँचकेँ कोना सरल बनाओल जा सकैत अछि ?

» प्रत्येक तहक अदालतक अधिकारसभ केहन-केहन होबाक चाही ?

» संघीय अदालतसभ प्रान्तीय अदालतसभक सँग कोना अन्तरक्रिया करत ?

» अदालतकेँ आर्थिक स्रोत कोना प्राप्त हएत ?

» मौलिक तथा मानवअधिकारक संरक्षणमे निचुकां तहक अदालतकेँ भूमिका कोन प्रकारक होबाक चाही ?

» समाजक कमजोर आ उपेक्षित समूहक पहुँचकेँ सुनिश्चित करबालेल कोन प्रकारक उपायसभक अबलम्बन करबाक चाही ?

» कि पृथक रूपसँ संवैधानिक अदालतसभक गठन होबाक चाही अथवा आवश्यक अछि ?

८. नेपालक न्यायिक इतिहास कि अछि ?

२००७ सालसँ पहिने राणा शासनमे नेपालक कार्यकारी, व्यवस्थापकीय तथा न्यायिक शक्तिसभ एकेगोट व्यक्तिमे निहीत छल । नेपालक पहिल संविधान नेपाल सरकार बैधानिक कानुन, २००४ मे न्यायपालिकासम्बन्धी व्यवस्था कएल गेल छल । मुदा, ई संविधान न्यायपालिकाक अधिकारक सम्बन्धमे कोनो बातक उल्लेख नहि केने छल । ओकराबादक संविधान, नेपालक अन्तरिम शासन संविधान, २००७

मे सेहो एहने कमजोरी कायमे रहल । ई संविधानमे प्रधान न्यायालयक स्थापनासम्बन्धी व्यवस्था छल । तथापि, ई संविधान प्रधान न्यायालयक कार्य आ अधिकारसभक सम्बन्धमे कोनो बातक उल्लेख नहि केलक । संगहि, अन्य तहक अदालतक सम्बन्धमे सेहो कोनो बातक चर्चा नहि केलक । मुदा, अन्य अदालतक सम्बन्धमे आवश्यक व्यवस्था करबाक काज आ अधिकार विधायिकाकेँ प्रदान केने छल ।

२०१५ सालक संविधान शक्ति पृथकीकरणक सिद्धान्तक विभिन्न तत्वसभकेँ समावेश केलक आ कार्यकारी तथा विधायिकी अंगसभक क्रियाकलापसभक लेल पुनरावलोकनसम्बन्धी व्यवस्था केलक । तथापि, एहिमेसँ कोनो प्रावधान कार्यान्वयन अथवा प्रभावकारी भेल वा नहि भेल ताहि बातक सम्बन्धमे अस्पष्टता कायमे रहल ।

२०१७ सालमे पंचायती व्यवस्था लागू क' राजनीतिक दलसभपर प्रतिबन्ध लगाओलगेल । ई राजनीतिक व्यवस्था लोकतान्त्रिक शासन, बहुलबाद, आ विधिक शासनक आधारभूत मूल्य आ मान्यतासभकेँ सेहो अस्वीकार केलक । सब शक्ति आ अधिकारसभ राजामे निहित भेल । ई व्यवस्थामे शक्तिक पृथकीकरणक अस्तित्व समापत भ' गेल । सर्वोच्च अदालतक सर्वोच्चता स्थापित नहि भेल आ अदालतक न्यायिक पुनरावलोकन अधिकारकेँ सीमित क' देल गेल छल ।

२०४७ सालक संविधान देशक इतिहासमे पहिलबेर शक्तिशाली न्यायपालिकाक सिर्जना केलक । ई संविधान सर्वोच्च अदालतकेँ संविधानक अन्तिम व्याख्याता आ मौलिक अधिकारसभक रक्षकक रूपमे प्रस्तुत केलक । ई संविधानमे न्यायिक स्वतन्त्रताक संरक्षण करबालेल सर्वोच्च अदालतक न्यायाधीशसभकेँ विधायिकी-संसदमे महाअभियोगक प्रक्रियाद्वारा मात्र पदमुक्त करबाक व्यवस्था कएल गेल । तहिना, न्यायाधीशसभक नियुक्ति, स्थानान्तरण आ पदोन्नतिक सिफरिश करबालेल न्यायपरिषदक गठनक लेल संवैधानिक व्यवस्था कएलगेल । जिला, पुनरावलोकन आ सर्वोच्च अदालत रहबाक हिसाबसँ तीन तहक अदालती व्यवस्थाक सिर्जना कएलगेल । संविधान सर्वोच्च अदालतकेँ पूर्ण न्याय निरूपणक लेल कोनो प्रकारक आदेश जारी क' सकबाक हिसाबसँ असाधारण अधिकार सेहो प्रदान केलक । हालक नेपालक अन्तरिम संविधानअन्तर्गत अदालती प्रणाली २०४७ सालक संविधानमे भेल व्यवस्था सदृश रहल अछि ।

संविधानसभामे विचार-विमर्श होब'बला विषयसभ

संविधानसभा स्वतन्त्र न्यायपालिकाक प्रारूप तैयार करैतकाल ध्यान देबायोग्य किछु विकल्पसभ निम्नलिखित अछि :-

विकल्पसभ	सबल पक्षसभ	चुनौतीसभ
न्यायपालिकाक व्यवस्थापन न्याय परिषद करत ।	» न्यायाधीशसभ राजनितिक अथवा अन्य प्रभावसँ मुक्त अथवा संरक्षित अछि ताहि बातक सुनिश्चिततामे सहयोग भेटैत अछि ।	» न्यायालिकाक व्यवस्थापन प्रमुख रूपसँ न्यायाधीशसभ करत त' ओकरासभकेँ थप (अतिरिक्त) स्रोत उपलब्ध हेबाक चाही आ ओकरासभकेँ एखुनका स्थितिसँ पृथक रूपसँ जवाबदेह सेहो हेबाक चाही ।

विकल्पसभ	सबल पक्षसभ	चुनौतीसभ
न्यायपालिकाक व्यवस्थापन कार्यकारी करत ।	» किछु व्यक्तिसभ निर्वाचित राजनीतिकर्मीकेँ किछु नियन्त्रणक अधिकार देलापर न्यायिक जवाबदेहिताकेँ सुनिश्चित करबामे सहयोग पहुँचैत अछि, से धारणा रखैत अछि ।	» एहिसँ राजनीतिकर्मीसभकेँ न्यायाधीश- सभक स्थानानतरण, पदोन्नति, अनुशा- सन तथा अन्य पक्षउपरक नियन्त्रणद्वारा न्यायपालिकाकेँ प्रभावमे राखव आसान होइत अछि ।
एकात्मक न्याय प्रणाली (संघ आ प्रान्तीय एकात्मक न्यायालय) ।	» ई व्यवस्थापन करबामे आसान होइत अछि । » ई काम खर्चिला होइत अछि । » क्षेत्राधिकारसम्बन्धी बहुत विवाद नहि होइत अछि । » अदालतक निर्णय कार्यान्वयन करबामे आसान होइत अछि ।	» प्रादेशिक मुद्दासभक (समस्यासभक) सम्बोधन प्रशस्त मात्रामे नहिओ भ'सकैत अछि । » ई व्यवस्था संघीय प्रणालीक लेल विशेष उपयुक्त नहिओ भ' सकैत अछि । » कठिन संवैधानिक विवादसभक निर्धारणक लेल ई उपयुक्त नहि भ' सकैत अछि ।
द्वैध न्यायपालिका (संघ आ प्रान्तक पृथक पृथक न्यायपालिका)	» संघीय आ प्रान्तीय अदालतक अधिकारसभ स्पष्ट रूपसँ विभाजन कएलगेल रहैत अछि । » गम्भीर संवैधानिक विवादसभ उचित रूपसँ निरूपण भ' सकैत अछि । » संघीय प्रणालीकेँ सुदृढ बनेबामे ई प्रभावकारी भूमिका निर्वाह क' सकैत अछि ।	» जटिल । » अधिकार बाँट-फाँटमे कठिनाई । » अधिकारक्षेत्रक विभाजनमे विवाद । » अदालतक तह तथा क्षेत्राधिकारमे बृद्धि हेबाक कारणसँ न्यायसम्पादनमे बिलम्बक सम्भावना ।
पृथक रूपसँ संवैधानिक अदालत	» संवैधानिक विषयसभक न्यायिक समाधान आसानीसँ प्राप्त भ' सकैत अछि । » संवैधानिक सर्वोच्चता स्थापित करबामे आसान होइत अछि । » राज्यक निकायसभकेँ संविधानक क्षेत्रअन्तर्गत रखबामे आसान होइत अछि । » संघीय व्यवस्था संचालन करबामे आसान होइत अछि ।	» कार्यान्वयन करबाक सम्बन्धमे ई खर्चिला होइत अछि । » क्षेत्राधिकारक विषयमे दोसर अदालतक संग विवाद उठि सकैत अछि । » ई जटिल होइत अछि ।
साधारण अथवा संवैधानिक विवादसभक सुनवाइक लेल एकल न्यायालय	» ई काम खर्चिला होइत अछि । » ई प्रणालीक सम्बन्धमे नेपालकेँ बेस अनुभव छैक । » कम जटिल (कठिन) अछि ।	» संवैधानिक विषयसभ उचित महत्व नहिओ पाबि सकैत अछि । » यथेष्ट ज्ञानक अभावमे जटिल संवैधानिक विषयसम्बन्धी निर्णयसभ भ' सकैत अछि । » संविधानक उचित व्याख्याक अनुपस्थितिमे संवैधानिक विवादक प्रक्रियामे व्यबधान ठाड भ' सकैत अछि ।

पुस्तिका शृंखला सम्बन्धमे

संविधानसभाक सदस्यसभकेँ आ इच्छुक सर्वसाधारणकेँ संविधान निर्माण प्रक्रियाक सम्बन्धमे आधारभूत जानकारी उपलब्ध कराएब एहि पुस्तिका शृंखलाक उद्देश्य अछि । ई प्रकाशनसभ संवैधानिक परिणाम सम्बन्धमे कोनो तरहक पूर्वानुमान कर'बला अवधारणापत्र अथवा प्रस्ताव अथवा मनसाय नहि अछि । ई शृंखला संयुक्त राष्ट्रसंघीय विकास कार्यक्रमक (यूएनडीपी) "नेपालमे सहभागितामूलक संविधान निर्माणक लेल सहयोग" (एसपीसीबीएन) परियोजनाक समन्वयमे नेपाली आ अन्तर्राष्ट्रिय संविधानविद्सभक सामूहिक प्रयासक प्रतिफल अछि ।

ई पुस्तिकासभकेँ आओर परिस्कृत बनेबा हेतु प्रतिक्रिया आ टिप्पणीक लेल विशेष अनुरोध अछि । बेसीसँबेसी सुसूचित, प्रतिबद्ध आ रचनात्मक विचारविमर्शकेँ प्रोत्साहित करबामे ई प्रकाशनसभ सफल भेलेपर अपेक्षित उद्देश्यक प्राप्ति भ'सकैए । प्राप्त टिप्पणीसभक आधारपर ई पुस्तिकासभक नव संस्करणक संगहि अतिरिक्त संस्करणसभ तैयार कएल जा सकैत अछि ।

ई शृंखलाकेँ नेपालक किछु प्रमुख भाषामे अनुबाद करबाक क्रममे उँच गुणस्तरक संगहि एहिकेँ सम्बन्धित भाषाक बेसीसँबेसी लोक बुझि सकए ताहिलेल ठीक शब्दावलीक प्रयोगक हरसम्भब प्रयास कएल गेल अछि । शब्दावलीक उपयुक्त आ ठीक प्रयोगक सम्बन्धमे बिभिन्न भाषिक समुदायसभक बीच भविष्यमे विचारविमर्श आ बहस होबाक अपेक्षा कएल जा सकैत अछि । संवैधानिक संवाद केन्द्रक उद्देश्य ओहन बहससभकेँ कोनो प्रकारेँ ओझलमे (छाहरिमे) नहि राखि ओहि भाषासभकेँ सेहो समावेश क' एहि प्रयासमे समाबेशिता आ पहुँचकेँ अधिकतम अभिवृद्धि करब अछि ।

देशमे संविधान निर्माणसँ सम्बन्धित बिषयबस्तुक सम्बन्धमे संवैधानिक संवाद केन्द्रद्वारा तैयार भ'रहल शृंखलाबद्ध पाठ्यसामाग्रीसभक एकटा अंश (भाग) ई पुस्तिका अछि ।

सभासदसभक संगाहि ई विषयबस्तुमे अभिरुचि रखनिहार सर्वसाधारणसमकेँ प्रमुख संवैधानिक अवधारणा आ मुद्दासभमे (समस्यासभमे) संलग्न कराएब एहि शृंखलाबद्ध प्रकाशनक उद्देश्य अछि। शृंखलाअन्तर्गतक प्रत्येक पुस्तिका नेपालमे प्रयुक्त (बाजल जाएबला) प्रमुख भाषासभ (नेपाली, मैथिली, भोजपुरी, थारु, मगर, तामांग, नेवार आ अंग्रेजी) मे उपलब्ध अछि। ई पाठ्यसामाग्रीसभक श्रव्य (सुनएबला) संस्करणक (कैसेट, सिडी) उपलब्धिक संगाहि एहिसभकेँ अनलाइनमे सेहो राखल गेल अछि ।

पहिल चरणमे ई प्रकाशन शृंखलामे समेटलगेल विषयबस्तुसभ एहि प्रकारेँ अछिः राज्य आ धर्म, संघीय प्रणाली, संविधानमे मानव अधिकार, आदिवासी जनजातिक अधिकार, अल्पसंख्यकक अधिकार, सरकारक प्रणालीसभ, स्वतन्त्र न्यायपालिका, स्थानीय स्वशासन, विविधता आ सामाजिक समावेशीकरण आ सहभागितामूलक संविधान निर्माण प्रक्रिया ।

संवैधानिक संवाद केन्द्र
तेसर आ चारिन तल्ला, अल्फा बेटा कम्प्लेक्स, बुद्धनगर, काठमाण्डू
टेलिफोन नं. ९७७-१-४७८५४६६/४७८५४८६/४७८५९९८
ई-मेल : info@ccd.org.np
वेबसाइट : www.ccd.org.np